भारत सरकार

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय

पशुपालन, डेयरी और मत्स्यपालन विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-1577

दिनांक 25 जुलाई 2017 के लिए प्रश्न

विषय: पर्यावरण-हितैषी मत्स्ययन पद्धतियों को बढ़ावा

1577. श्री बैजयंत जे पांडाः

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) सरकार द्वारा देश में मछुआरों के बीच पर्यावरण-हितैषी मत्स्ययन पद्धतियों को बढ़ावा देने हेतु उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या समुचित और वैज्ञानिक मत्स्ययन रणनीतियों को तैयार करने के उद्देश्य से देश में उपलब्ध मत्स्ययन संसाधनों के संबंध में सरकार द्वारा कोई दीर्घावधिक या अल्पावधिक अन्वेषणात्मक सर्वेक्षण किया गया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या अति-मत्स्ययन के परिणामों का विश्लेषण करने हेतु भी कोई जैव-विविधता अध्ययन आयोजित किया जा रहा है; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री

श्री सुदर्शन भगत

(क) पशुपालन, डेयरी और मत्स्यपालन विभाग ने हाल ही में 28.04.2017 को 'राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति, 2017' (एनपीएमएफ) अधिसूचित की है, जिसका उद्देश्य समुद्री मात्स्यिकी के संसाधनों का धारणीय उपयोग तथा देश में मछुआरों के बीच पर्यावरण हितैषी मत्स्ययन पद्धतियों का संवर्धन करना है। इसके अलवा, मात्स्यिकी में धारणीयता का संवर्धन करने के लिए भारतीय अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) में 61 दिनों का एक समान मात्स्यिकी प्रतिबंध कार्यान्वित किया गया है ताकि स्वस्थ समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र प्राप्त हो सके। वैज्ञानिक परामर्श के आधार पर, कुछ समुद्रवर्ती राज्यों ने मछुआरों में पर्यावरण हितैषी मत्स्ययन पद्धतियों के संवर्धन के लिए वाणिज्यिक मछली पकड़ने के लिए न्यूनतम वैध आकार (एमएलएस) कार्यान्वित किया है। सभी समुद्रवर्ती राज्यों ने समुद्री मात्स्यिकी प्रबंधन उपाय के भाग के रूप में ट्राल-नेट्स तथा अन्य गियरों के लिए जाली के वैध आकार की भी घोषणा की है। उन तटवर्ती जलों में जहां प्रजनन के लिए समुद्री कछुए उपलब्ध है, संबंधित समुद्रवर्ती राज्यों ने पर्यावरण हितैषी पद्धति के रूप में ट्राल-नेट्स में कछुआ अपवर्जन उपकरण (टरटल एक्सक्लूजन डिवाइस) लागू किया है।

(ख) जी हॉ, भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण (एफएसआई) तथा केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीएमएफआरआई) जैसे वैज्ञानिक संस्थान, समुद्री मात्स्यिकी संसाधनों की उपलब्धता तथा वितरण की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए दीर्घावधिक तथा अल्पावधिक अन्वेषणात्मक मात्स्यिकी संसाधन सर्वेक्षण आयोजन करते हैं। एफएसआई तथा सीएमएफआरआई ने प्रमुख मात्स्यिकी संसाधनों के लिए मात्स्यिकी चार्टों तथा नक्शों के रूप में सर्वेक्षण परिणाम प्रकाशित किए हैं।

(ग) और (घ) सीएमएफआरआई के पास समुद्री जैव-विविधता प्रभाग है, जो समुद्री जैव-विविधता पर अधिमत्स्ययन के प्रभाव पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है, विशेषत: समुद्री जीव-जन्तु पर बाटम ट्रॉलिंग एवं अन्य गियरों के प्रभाव का अध्ययन कर रहा है। इन अध्ययनों के आधार पर, सीएमएफआरआई ने उन मत्स्ययन गियरों और स्थानों की पहचान की है जहॉ जैव-विविधता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।